मधु काँकरिया के कथा–साहित्य में व्याप्त समसामयिक परिदृश्य

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

को कला संकायान्तर्गत हिंदी साहित्य में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी

की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–रूपरेखा

2016

शोध–छात्रा
रम्भा रत्नाकर
एम. फिल.

सह–निर्देशक
डॉ. शीला दानी
सहायक प्राध्यापक
शास. कला एवं वाणिज्य कन्या
महाविद्यालय, देवेन्द्र नगर,
रायपुर (छ.ग.)

शोध निर्देशक
डॉ. रेणु सक्सेना
प्राध्यापक / विभागाध्यक्ष (हिंदी)
शासकीय नागार्जुन स्नात.
विज्ञान महाविद्यालय
रायपुर (छ.ग.)

शोध–केन्द्र

शास. कला एवं वाणिज्य कन्या महाविद्यालय, देवेन्द्र नगर,

रायपुर (छ.ग.)

1.	शोध प्रबंध का शीर्षक	:	मधु काँकरिया के कथा–साहित्य में व्याप्त समसामयिक परिदृश्य
2.	विश्वविद्यालय	:	पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
3.	शोध–केन्द्र	:	शास. कला एवं वाणिज्य कन्या महाविद्यालय, देवेन्द्र नगर, रायपुर (छ.ग.)
4.	विषय	:	हिंदी साहित्य
5.	निर्देशक	:	डॉ. रेणु सक्सेना प्राध्यापक / विभागाध्यक्ष (हिंदी) शास. नागार्जुन स्नात. विज्ञान महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)
6.	सह–निर्देशक	:	डॉ. शीला दानी सहायक प्राध्यापक शास. कला एवं वाणिज्य कन्या महाविद्यालय, देवेन्द्र नगर, रायपुर (छ.ग.)
7.	शोध–छात्रा	:	रम्भा रत्नाकर एम.फिल.

1. शीर्षक : मधु काँकरिया के कथा–साहित्य में व्याप्त समसामयिक परिदृश्य

2. परिचय :

हिंदी कथा–साहित्य में मधु काँकरिया ने अपनी एक अलग ही पहचान बनाई है। उन्होनें मारवाड़ी समाज से ताल्लुक रखते हुए भी उसके दुराग्रहों से बाहर निकलकर लेखन कार्य किया है। उनकी प्रत्येंक रचना में हमें समसामयिक वातावरण प्रतिबिंबित होता दिखाई देता है। उन्होनें भारतीय संस्कृति एवं समाज को बहुत नजदीक से देखा है, जिसका चित्रण उनकी रचनाओं में स्पष्ट देखा जा सकता है।

सन् 1957 में कोलकाता (पं. बंगाल) में जन्मी मधु काँकरिया को आनंद सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान (2008), राय उमानाथ बली प्रेक्षाग्रह में प्रदान किया गया । साथ ही प्रख्यात आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी, वरिष्ठ कथाकार और हंस के संपादक राजेन्द्र यादव, कथाकार गिरिराज किशोर ने उन्हें शॉल, स्मृति चिन्ह और 15 हजार रूपये का चेक देकर सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त लेखिका को हेमचन्द्र स्मृति साहित्य सम्मान 2009, समाज गौरव सम्मान 2009, विजय वर्मा कथा सम्मान 2012, शिवकुमार स्मृति कथा सम्मान 2015, प्रथम विंध्य साहित्य–सम्मान 2015 आदि से पुरस्कृत किया गया है।

अपनी जन्मभूमि में ही उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. तथा कम्प्यूटर एप्लीकेशन में डिप्लोमा भी किया है। मधु काँकरिया अपनी रचनाओं **खुले गगन के लाल सितारे, सलाम आखिरी, पत्ताखोर, सेज पर संस्कृति** और **सूखते चिनार** उपन्यासों के ज़रिये कथा–साहित्य में चर्चित हैं। इसके अतिरिक्त अन्य रचनाएँ **बीतते हुए, और अंत में ईशु, चिड़िया ऐसे मरती है, युद्ध और बुद्ध, भरी दोपहरी के अंधेरे,** (कहानी संग्रह) आदि लिखी हैं।

मारवाड़ी लेखिकाओं में महत्वपूर्ण नाम मन्नू भण्डारी, प्रभा खेतान, अलका सराबगी और मधु काँकरिया आता है। इन सब की लेखन की पृश्ठभूमि अलग है। लेकिन मधु काँकरिया ने नये विषयों को लेकर अपने कथा–साहित्य का सृजन किया है। उनका

कथा–साहित्य बहुआयामी है। उन्होंने विभिन्न व्यक्तिगत एवं सामाजिक पक्षों को लेकर साहित्य लेखिनी चलाई है।

उनकी रचनाओं में विचार और संवेदना की नवीनता परिलक्षित होती है। समाज में व्याप्त अनेक ज्वलंत समस्याएँ जैसे–मारवाड़ी समाज के जीवन और कुरीतियाँ, धर्म की आड़ में हो रही अपसंस्कृति का विरोध, महानगर की घुटन और असुरक्षा के बीच युवाओं में बढ़ती नशे और ड्रग्स की आदत, लालबत्ती इलाकों की पीड़ा तथा देश में नक्सलवाद को लेकर छिड़ी बहस के बीच लेखिका ने नक्सलवाद को आधार बनाकर संवेदनशील आख्यान रचा है।

उन्होंने लेखन में राजनीतिक सक्रियता, वैचारिक हस्तक्षेप और अन्य मसलों को चुना है, साथ ही सामंती पितृसत्तात्मक समाज और धर्म से नारी मुक्ति की बात उठाई है तथा सभी धर्मों के दकियानूसीपन को उजागर किया है जिसे हम उनके उपन्यास **सेज पर संस्कृति** में देख सकते हैं। इस प्रकार मधु काँकरिया के पास धर्म और समाज को समझने की बेहद संवेदनशील दृष्टि रही है।

अतः लेखिका ने पूरे दुस्साहस के साथ अपने समय के धर्मांतरण का पर्दाफाश किया है।

3. इस क्षेत्र में पूर्व में किए गए कार्य का संक्षिप्त विवरण

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में मेरी जानकारी के अनुसार अब तक कोई भी ऐसा कार्य प्रकाश में नहीं आया है, जो मधु काँकरिया के कथा—साहित्य में व्याप्त समसामयिक परिदृ य जैसे विशय पर केन्द्रित हो। कतिपय समीक्षकों ने मधु काँकरिया की कहानियों एवं उपन्यासों को लेकर अपना अध्ययन प्रस्तुत किया है। साथ ही उनकी रचनाओं पर बॉम्बे विश्वविद्यालय में शोध—कार्य एवं अन्य छुट—पुट कार्य भी हुए हैं।

4. उद्‌देश्य

इस शोध कार्य के माध्यम से कथाकार मधु काँकरिया की छिपी हुई साहित्यिक प्रतिभा एवं उनकी रचनाओं के माध्यम से जनमानस को जागरूक करते हुए हिंदी साहित्य में उनके योगदान को स्थापित करना है।

5. महत्व

इस शोध के माध्यम से मेरा प्रयास होगा कि मधु काँकरिया की रचनाओं में व्याप्त समसामयिक परिदृश्य जैसे—नक्सलवाद, युवाओं में बढ़ती नशे और ड्रग्स की आदत, धर्मातंरण, धार्मिक आडम्बरों के व्यूह में फँसी स्त्री मन की व्यथा को उजागर तथा वेश्याओं और वेश्यावृत्ति के पूरे परिदृश्य को देखते हुए जनमानस में उन असहाय स्त्रियों के प्रति करूणा की भावना निर्मित करना मेरा प्रमुख उद्‌देश्य होगा।

मैनें अपने अध्ययन के दौरान जाने—अनजाने में मधु काँकरिया की रचनाओं को पढ़ा, समझा और प्रभावित होने के पश्चात् अपने शोध निर्देशक के मार्गदर्शन में प्रसिद्ध गद्‌यकार को अपना शोध विषय बनाया। ताकि आने वाले समय में अनेक शोधार्थी लाभान्वित हो सकें।

6. प्रस्तावित शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध विषय में पुस्तकालयों, सुसंगत विभिन्न ग्रंथों का संग्रह, संदर्भ ग्रंथों एवं पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन, सुसंगत समीक्षा ग्रंथों एवं साहित्यिक कृतियों की गहराई से अध्ययन आदि की सहायता लेते हुए वस्तुतथ्यात्मक अनुसंधान तथा प्रवृत्तिमूलक अनुसंधान प्रणाली द्वारा शोध कार्य के उद्देश्य को पूरा किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त प्रश्नावली एवं साक्षात्कार प्रविधि द्वारा महत्वपूर्ण तथ्यों का संकलन तथा इंटरनेट ब्लॉग, ई–मेल आदि माध्यमों को शोध प्रविधि में शामिल कर आवश्यकतानुसार संबंधित सामग्री ग्रहण किए जा सकते हैं।

शोध–सीमाएँ

शोधकार्य के सीमित समय को ध्यान में रखते हुए मैनें मधु काँकरिया की पाँच उपन्यास एवं चार कहानी संग्रह को अपने शोध हेतु सम्मिलित किया है। जिसमें व्याप्त समसामयिक परिदृश्य दृश्टिगोचर होता है। साथ ही हिंदी कथा साहित्य के इतिहास को रेखांकित करने का प्रयास किया है। इस प्रकार समकालीन हिंदी कथा–साहित्य में मधु काँकरिया का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

7. प्रस्तावित कार्य का संभावित परिणाम

मधु काँकरिया ने अपने उपन्यासों एवं कहानियों के माध्यम से समाज में व्याप्त अनेक ज्वलंत समस्याओं एवं देश में फैले नक्सलवाद की समस्या को विशेष रूप से उभारा है। मेरे शोध कार्य से यह लाभ होगा कि पाठक वर्ग समाज मे हो रहे नकारात्मक कार्यों के दुष्प्रभावों से युवाओं को सचेत करेगा।

शोध प्रबंध को अध्यायों में विभक्त करने वाली प्रस्तावित रूपरेखा संलग्न है।

मधु काँकरिया के कथा–साहित्य में व्याप्त समसामयिक परिदृश्य

प्रस्तावना :

1. विषय की व्याख्या
2. विषय की व्याप्ति, सीमाएँ एवं पूर्वानुसंधान
3. प्रबंध का कार्यक्षेत्र
4. महत्व

प्रथम अध्याय : मधु काँकरिया : व्यक्तित्व एवं सृजन–संसार

1.1 जीवन–वृत्त

1.2 शिक्षा–दीक्षा

1.3 साहित्यिक प्रेरणा

1.4 पुरस्कार एवं सम्मान

1.5 रचना–धरातल

1.5.1 मधु काँकरिया के उपन्यास

1.5.1.1	खुले गगन के लाल सितारे	(2000)
1.5.1.2	सलाम आखिरी	(2002)
1.5.1.3	पत्ताखोर	(2005)
1.5.1.4	सेज पर संस्कृति	(2008)
1.5.1.5	सूखते चिनार	(2012)

1.5.2 मधु काँकरिया के कहानी–संग्रह

1.5.2.1	बीतते हुए	(2004)

1.5.2.2 और अंत में ईशु (2008)

1.5.2.3 दस प्रतिनिधि कहानियाँ (2008)

1.5.2.4 चिड़िया ऐसे मरती है (2011)

1.5.2.5 युद्ध और बुद्ध (2012)

1.5.2.6 भरी दोपहरी के अंधेरे

1.5.3 सामाजिक विमर्श – अपनी धरती अपने लोग (2013)

1.5..4 यात्रा संस्मरण – बादलों में बारूद

द्वितीय अध्याय : समकालीन हिन्दी कथासाहित्य और मधु कॉकरिया

तृतीय अध्याय : मधु कॉंकरिया के उपन्यासों का विश्लेषण

3.1 उपन्यास में व्याप्त समसामयिक परिस्थितियाँ

3.2 विभिन्न समस्याओं का चित्रण

3.3 उपन्यासों में निहित जीवन–मूल्य

3.4 शिल्प–विधान

समाकलन

चतुर्थ अध्याय : मधु कॉंकरिया की कहानियों का विश्लेषण

4.1 कहानियों में व्याप्त समसामयिक परिस्थितियाँ

4.2 विभिन्न समस्याओं का चित्रण

4.3 कहानियों में निहित जीवन–मूल्य

4.4 शिल्प–विधान

समाकलन

पंचम अध्याय : **मधु काँकरिया के कथा–साहित्य में समसामयिक नारी विषयक दृश्टिकोण**

5.1 मधु काँकरिया के उपन्यासों में नारी–संवेदना

5.2 मधु काँकरिया की कहानियों में नारी–अस्मिता

पष्ठ अध्याय : **मधु काँकरिया के कथा–साहित्य में शहरी परिवेश**

उपसंहार :

परिशिष्ट :

1. आधार – ग्रंथ
2. संदर्भ–ग्रंथ
3. पत्र–पत्रिकाएँ
4. वेबसाइट
5. साक्षात्कार

आधार – ग्रंथ

अ. उपन्यास –

1. मधु काँकरिया, खुले गगन के लाल सितारे, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2007
2. मधु काँकरिया, पत्ताखोर, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2012
3. मधु काँकरिया, सेज पर संस्कृति, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2014
4. मधु काँकरिया, सलाम आखिरी, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2016

ब. कहानी संग्रह –

1. मधु काँकरिया, बीतते हुए, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2004
2. मधु काँकरिया, और अंत में ईसु, नई दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, संस्करण 2006
3. मधु काँकरिया, चिड़िया ऐसे मरती है, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण 2011
4. मधु काँकरिया, युद्ध और बुद्ध, नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण 2014

सहायक–ग्रंथ

1. अग्रवाल, साधना, वर्तमान हिंदी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य जीवन, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन,, संस्करण 1995
2. कावले, सुनीता, कथाकार मधुकॉकरिया, कानपुरः रोली प्रकशन, संस्करण 2011
3. नगेन्द्र, हरदयाल, हिंदी साहित्य का इतिहास, दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, संस्करण 1973
4. बेहरा, शिखा, साहित्य वाचस्पति पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय, रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2006
5. मिश्र, रामदरश, आज का हिंदी साहित्य : संवेदना और दृष्टि, नई दिल्ली : अभिनव प्रकाशन, संस्करण 1975
6. राणावत, उषा कीर्ति, मधुकॉकरिया का रचना संसार कानपुरः शैलजा प्रकाशन, संस्करण 2012
7. शर्मा, शंकरदयाल, हमारे जीवन मूल्य, नई दिल्ली : प्रवीण प्रकाशन, संस्करण 1996

पत्र–पत्रिकाएँ

1. हंस, जून 2014

2. उद्भावना, फरवरी 2015

3. वागर्थ, मई 2015

4. आलोचना, अंक 52, 2015

शोध–छात्रा
रम्भा रत्नाकर
एम. फिल.

सह–निर्देशक	**निर्देशक**
डॉ. शीला दानी	डॉ. रेणु सक्सेना
सहायक प्राध्यापक	प्राध्यापक / विभागाध्यक्ष (हिंदी)
शास. कला एवं वाणिज्य	शाससकीय नागार्जुन स्नात.
कन्या महाविद्यालय, देवेन्द्र नगर,	विज्ञान महाविद्यालय
रायपुर (छ.ग.)	रायपुर (छ.ग.)

अग्रेशित

प्राचार्य

शोध–केन्द्र

शास. कला एवं वाणिज्य कन्या महाविद्यालय, देवेन्द्र नगर, रायपुर (छ.ग.)